॥ ५ - छिन्नमस्तिका महाविद्या स्तोत्र एवं कवचम् ॥

अनुक्रमाणिका
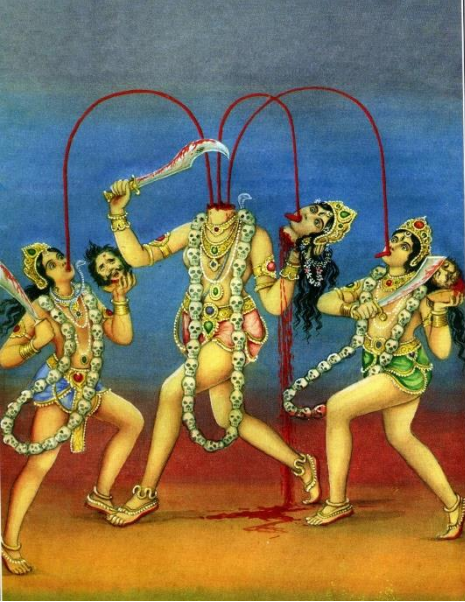
माँ छिन्नमस्ता

छिन्नमस्ता यन्त्र

॥ छिन्नमस्तिका ॥

दस महा विद्याओं में छिन्नमस्तिका माता पांचवी महाविद्या कहलाती हैं। परिवर्तनशील जगत्का अधिपति कबन्ध है और उसकी शक्ति ही छिन्नमस्ता है। विश्वकी वृद्धि-ह्रास तो सदैव होती रहती है। जब ह्रास की मात्रा कम और विकास की मात्रा अधिक होती है, तब भुवनेश्वरी का प्राकट्य होता है। इसके विपरीत जब निर्गम अधिक और आगम कम होता है, तब छिन्नमस्ताका प्राधान्य होता है।

इनके प्रादुर्भावकी कथा इस प्रकार है-एक बार भगवती भवानी अपनी सहचरी जया और विजया के साथ मन्दाकिनी में स्नान करने के लिये गयीं। स्नानोपरान्त क्षुधाग्निसे पीड़ित होकर वे कृष्णवर्ण की हो गयीं। उस समय उनकी सहचरियों ने भी उनसे कुछ भोजन करने के लिये माँगा। देवीने उनसे कुछ समय प्रतीक्षा करने के लिये कहा थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के बाद सहचरियों ने जब पुनः भोजन के लिये निवेदन किया, तब देवीने उनसे कुछ देर और प्रतीक्षा करने के लिये कहा। इसपर सहचरियों ने देवीसे विनम्र स्वरमें कहा कि 'माँ तो अपने शिशुओं को भूख लगने पर अविलम्ब भोजन प्रदान करती है। आप हमारी उपेक्षा क्यों कर रही हैं?' अपने सहचरियों के मधुर वचन सुनकर कृपामयी देवीने अपने खड्ग से अपना सिर काट दिया। कटा हुआ सिर देवी के बायें हाथ में आ गिरा और उनके कबन्धसे रक्तकी तीन धाराएँ प्रवाहित हुईं। वे दो धाराओं को अपनी दोनों सहचरियों की ओर प्रवाहित कर दी, जिसे पीती हुई दोनों प्रसन्न होने लगी और तीसरी धारा को देवी स्वयं पान करने लगीं। तभीसे देवी छिन्नमस्ताके नामसे प्रसिद्ध हुईं।

मार्कंडेय पुराण के अनुसार जब देवी ने चंडी का रूप धरकर राक्षसों का संहार किया। एवं देवों को विजय दिलवाई तो चारों ओर उनका जय घोष होने लगा। परंतु देवी की सहायक योगिनियाँ अजया और विजया की रुधिर पिपासा शांत नहीं हो पाई थी, इस पर उनकी रक्त पिपासा को शांत करने के लिए माँ ने अपना मस्तक काटकर अपने रक्त से उनकी रक्त प्यास बुझाई। इस कारण माता को छिन्नमस्तिका पडा।

इस परिवर्तन शील जगत का अधिपति कबंध है और उसकी शक्ति छिन्नमस्ता है। इनका सिर कटा हुआ और इनके कबंध से रक्त की तीन धाराएं बह रही है। इनकी तीन आंखें हैं और ये मदन और रति पर आसीन है। देवी के गले में हड्डियों की माला तथा कंधे पर यज्ञोपवीत है। इसलिए शांत भाव से उपासना करने पर यह अपने शांत स्वरूप को प्रकट करती हैं। उग्र रूप में उपासना करने पर यह उग्र रूप में दर्शन देती हैं।

चतुर्थ संध्याकाल में छिन्नमस्ता की उपासना से साधक को सरस्वती सिद्ध हो जाती हैं। कृष्ण और रक्त गुणों की देवियां इनकी सहचरी हैं। पलास और बेलपत्रों से छिन्नमस्ता महाविद्या की सिद्धि की जाती है।

यह विद्या बहुत ही तीव्र है जो बहुत जल्दी अपना परिणाम दिखाने लगती हैं. यह छिन्नमस्ता देवी शत्रुओं का तुरंत नाश करनेवाली, वाक सिद्धि देनेवाली, रोग मुक्त करने वाली, रोजगार में सफलता, नौकरी में पदोन्नति, कोर्ट केस में मुक्ति दिलाने के लिए जानी जाती हैं. सरकार को आपके पक्ष में करनेवाली, कुण्डलिनी जागरण में सहायक, पति-पत्नी को तुरंत वश में करनेवाली चमत्कारी देवी हैं। श्री भैरवतन्त्र में कहा गया है कि इनकी आराधना से साधक जीवभाव से मुक्त होकर शिवभाव को प्राप्त कर लेता है।

- मुख्य नाम **छिन्नमस्ता।**
- अन्य नाम **छिन्न-मुंडा, छिन्न-मुंडधरा, आरक्ता, रक्त-नयना, रक्त-पान-परायणा, वज्रवराही, चिंतपूर्णी।**
- भैरव **क्रोध-भैरव।**
- विष्णु के २४ अवतारों से सम्बद्ध **भगवान नृसिंह अवतार।**
- तिथि **वैशाख शुक्ल चतुर्दशी।**
- कुल **काली कुल।**
- दिशा **उत्तर।**
- स्वभाव **उग्र, तामसी गुण सम्पन्न।**
- तीर्थ स्थान या मंदिर झारखंड की राजधानी रांची से लगभग 79 किलोमीटर की दूरी रजरप्पा के भैरवी-भेड़ा और दामोदर नदी के संगम पर स्थित मां छिन्नमस्तिके का यह मंदिर है। रजरप्पा की छिन्नमस्ता को 52 शक्तिपीठों में शुमार किया जाता है। चिन्तपुर्णी देवी के नाम से हिमाचल (ऊना जिला)
- कार्य सभी प्रकार के कार्य हेतु दृढ़ निश्चितता, अहंकार तथा समस्त प्रकार के अवगुणों का छेदन करने हेतु शक्ति प्रदाता, कुण्डलिनी जाग्रति में सहायक।
- शारीरिक वर्ण **करोड़ों उदित सूर्य के प्रकाश समान कान्तिमयी।**
- विशेषता : **मोक्षविद्या।**

॥ छिन्नमस्ता का मंत्र ॥

- रूद्राक्ष या काले हकीक की माला से कम से कम ग्यारह या बीस माला प्रतिदिन मंत्र का जाप कर सकते हैं।
- नोट : छिन्नमस्ता महाविद्या साधना विधि आप बिना गुरु बनाये ना करें गुरु बनाकर व अपने गुरु से सलाह लेकर इस साधना को करना चाहिए। क्युकी बिना गुरु के की हुई साधना आपके जीवन में हानि ला सकती है।
-
- मंत्र **श्रीं ह्लीं ऐं वज्र वैरोचानियै ह्लीं फट स्वाहा।**
- मंत्र **श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं वज्र-वैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा।**
- मंत्र **श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्र-वैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा।**
- मंत्र वशीकरण **हुं / हुं स्वाहा / क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं वज्र वैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट स्वाहा।**
- धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्राप्ति हेतु मंत्र **ॐ हुं स्वाहा ॐ।**
- पापो से मुक्ति दिलवाने हेतु मंत्र **हूं श्री ही ऐं वज्र वैरोचनीये हूं हूं फट स्वाहा।**
- वाक शक्ति हेतु मंत्र **श्रीं ह्रीं हूं ऐं वज्रवैरोचनीये श्रीं ह्रीं हूं ऐं स्वाहा।**
- ऐश्वर्य और समोहन शक्ति हेतु मंत्र **ह्रीं हूं वज्र वैरोचनीये हुं फट स्वाहा।**
- मंत्र **ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं वज्र वैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।**
    - इस मंत्र का पुरश्चरण 4 लाख जप है। जप का दशांश होम पलाश या बिल्व फलों से करना चाहिए।
    - तिल व अक्षतों के होम से सर्वजन वशीकरण,
    - स्त्री के रज से होम करने पर आकर्षण,
    - श्वेत कनेर पुष्पों से होम करने से रोग मुक्ति,
    - मालती पुष्पों के होम से वाचा सिद्धि व
    - चंपा के पुष्पों से होम करने पर सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है।

॥ छिन्नमस्ता ध्यान ॥

- प्रत्यालीढपदां सदैव दधतीं छिन्नं शिरः कर्त्तृकाम् ।
  दिग्वस्त्रां स्वकबन्धशोणितसुधाधारां पिबन्तीं मुद्राम् ॥ ॥ १ ॥
- नागाबद्धशिरोमणिं त्रिनयनां हृद्युत्पलालङ्कृताम् ।
  रक्तासक्तमनोभवोपरि दृढां ध्यायेज्जपासन्निभाम् ॥ ॥ २ ॥
- दक्षे चातिसिताविमुक्तचिकुरा कर्तस्तथा खर्परं ।
  हस्ताभ्यां दधतीं रजोगुणभुवा नाम्नाऽपि सा वर्णिनी ॥ ॥ ३ ॥
- देव्याश्छिन्नकबन्धतः पतदसृग्धारां पिबन्तीं मुदा ।
  नागाबद्धशिरोमणिर्मनुविदा ध्येय सदा सा सुरैः ॥ ॥ ४ ॥
- वामे कृष्णतनूस्तथैव दधती खंगं तथा खर्परं ।
  प्रत्यालीढपदा कबन्धविगलद्रक्तं पिबन्ती मुदा ॥ ॥ ५ ॥
- सैषा या प्रलये समस्तभुवनं भोक्तुं क्षमा तामसी ।
  शक्तिः सापि परात् परा भगवती नाम्ना परा डाकिनी ॥ ॥ ६ ॥

॥ छिन्नमस्ता द्वादश नाम स्तोत्रम् ॥

- छिन्नग्रीवा छिन्नमस्ता छिन्नमुण्डधराऽक्षता ।
  क्षोदक्षेमकरी स्वक्षा क्षोणीशाच्छादनक्षमा ॥ ॥ १ ॥
- वैरोचनी वरारोहा बलिदानप्रहर्षिता ।
  बलिपूजितपादाब्जा वासुदेव प्रपूजिता ॥ ॥ २ ॥
- इति द्वादशनामानि छिन्नमस्ताप्रियाणि यः |
  स्मरेत्प्रातस्समुत्थाय तस्य नश्यन्ति नश्यन्ति शत्रवः ॥ ॥ ३ ॥

॥ छिन्नमस्ता देवि स्तोत्रम् ॥

- ईश्वर उवाच स्तवराजमहं वन्दे वै रोचन्याः शुभप्रदम् ।

- नाभौ शुभ्रारविन्दं तदुपरि विलसन्मण्डलं चण्डरश्मेः
संसारस्यैकसारां त्रिभुवनजननीं धर्मकामार्थदात्रीम् ।
तस्मिन्मध्ये त्रिमार्गे त्रितयतनुधरां छिन्नमस्तां प्रशस्तां
तां वन्दे छिन्नमस्तां शमनभयहरां योगिनीं योगमुद्राम् ॥ ॥ १ ॥

- नाभौ शुद्धसरोजवक्त्रविलसद्बन्धूकपुष्पारुणं
भास्वद्भास्करमण्डलं तदुदरे तद्योनिचक्रं महत् ।
तन्मध्ये विपरीत मैथुन रतप्रद्युम्नसत्कामिनी-
पृष्ठस्थाम् तरुणार्ककोटिविलसत्तेजः स्वरूपां भजे ॥ ॥ २ ॥

- वामे छिन्नशिरोधरां तदितरे पाणौ महत्कर्तृकां
प्रत्यालीढपदां दिगन्तवसनामुन्मुक्तकेशव्रजाम् ।
छिन्नात्मीयशिरः समुल्लसदसृग्धारां पिबन्तीं परां
बालादित्यसमप्रकाशविलसन्नेत्रत्रयोद्भासिनीम् ॥ ॥ ३ ॥

- वामादन्यत्र नालं बहु बहुलगलद्रक्तधाराभिरुच्चैः
गायन्तीमस्थिभूषां करकमललसत्कर्तृकामुग्ररूपाम् ।
रक्तामारक्तकेशीमपगतवसनां वर्णिनीमात्मशक्तिं
प्रत्यालीढोरुपादामरुणितनयनां योगिनीं योगनिद्राम् ॥ ॥ ४ ॥

- दिग्वस्त्रां मुक्तकेशीं प्रलयघटघटाघोररूपां प्रचण्डां,
दंष्ट्रा दुष्प्रेक्ष्य वक्त्रोदरविवरलसल्लोलजिह्वाग्र भागाम् ।
विद्युल्लोलाक्षियुग्मां हृदयतटलसद्भोगिनीं भीममूर्त्तिं,
सद्यश्छिन्नात्मकण्ठप्रगलितरुधिरैर्डाकिनीं वर्धयन्तीम् ॥ ॥ ५ ॥

- ब्रह्मेशानाच्युताद्यैः शिरसि विनिहता मन्दपादारविन्दै-
राप्तैर्योगीन्द्रमुख्यैः प्रतिपदमनिशं चिन्तितां चिन्त्यरूपाम् ।
संसारे सारभूतां त्रिभुवनजननीं छिन्नमस्तां प्रशस्ता मिष्टां,
तामिष्टदात्रीं कलिकलुषहरां चेतसा चिन्तयामि ॥ ॥ ६ ॥

- उत्पत्तिस्थितिसंहृतीर्घटयितुं धत्ते त्रिरूपां तनुम् ।
  त्रैगुण्याज्जगतो मदीय विकृतिर्ब्रह्माच्युतः शूलभृत् ॥
  तामाद्यां प्रकृतिं स्मरामि मनसा सर्वार्थ संसिद्धये ।
  यस्याः स्मेरपदारविन्दयुगले लाभं भजन्ते नराः ॥ ॥ ७ ॥

- अभिलषित परस्त्री-योगपूजापरोऽहं,
  बहुविधजनभावारम्भसम्भावितोऽहम् ।
  पशुजनविरतोऽहं भैरवीसंस्थितोऽहं,
  गुरुचरणपरोऽहं भैरवोऽहं शिवोऽहम् ॥ ॥ ८ ॥

- इदं स्तोत्रं महापुण्यं ब्रह्मणा भाषितं पुरा ।
  सर्वसिद्धिप्रदं साक्षान् महापातक नाशनम् ॥ ॥ ९ ॥

- यः पठेत् प्रातरुत्थाय देव्याः सन्निहितोऽपि वा ।
  तस्य सिद्धिर्भवेद्देवि वाञ्छितार्थ प्रदायिनी ॥ ॥१०॥

- धनं धान्यं सुतां जायां हयं हस्तिनमेव च ।
  वसुन्धरां महाविद्यामष्टसिद्धिं लभेद् ध्रुवम् ॥ ॥११॥

- वैयाघ्राजिनरञ्जितस्वजघनेऽ रम्ये प्रलम्बोदरे
  खर्वेऽनिर्वचनीयपर्वसुभगे मुण्डावलीमण्डिते ।
  कर्त्रीं कुन्दरुचिं विचित्र रचनां ज्ञाने दधाने पदे
  मातर्भक्तजनानुकम्पित महामायेऽस्तु तुभ्यं नमः ॥ ॥१२॥

॥ इति ब्रह्मकृतम् छिन्नमस्ता स्तोत्रम् ॥

॥ छिन्नमस्ता स्तोत्रम् अथवा प्रचण्ड चण्डिका स्तवराजः ॥

देवी छिन्नमस्ता दस महाविद्या में से छठवीं महाविद्या हैं । बैसाख मास की शुक्ल पक्ष चर्तुदशी को छिन्नमस्ता जयंती मनायी जाती है । छिन्नमस्ता देवी सर्वसिद्धि को पूर्ण करने वाली हैं।

छिन्नमस्ता देवी को चिंतपूर्णी भी कहा जाता है। उनके इस रूप की चर्चा शिव पुराण और मार्कण्डेय पुराण में भी देखने को मिलता है । मां छिन्नमस्ता चिंताओं का हरण करने वाली हैं । देवी के गले में हड्डियों की माला मौजूद है और कंधे पर यज्ञोपवीत है । शांत भाव से देवी की आराधना करने पर शांत स्वरूप में प्रकट होती हैं । लेकिन उग्र रूप में पूजा करने से उग्र रूप धारण करती हैं ।

पलास और बेलपत्रों से छिन्नमस्ता महाविद्या की सिद्धि की जाती है । इन सिद्धियों से बुद्धि, ज्ञान, बढ जाता है । शरीर रोग मुक्त हो जाता है । प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष शत्रु परास्त होते है ।

- **आनन्दयित्रि परमेश्वरि वेदगर्भे, मातः पुरन्दरपुरान्तरलब्धनेत्रे ।**
  लक्ष्मीमशेषजगतां परिभावयन्तः, सन्तो भजन्ति भवतीं धनदेशलब्ध्यै ॥ ॥ १ ॥

- **लज्जानुगां विमलविद्रुमकान्तिकान्तां, कान्तानुरागरसिकाः परमेश्वरि त्वाम् ।**
  ये भावयन्ति मनसा मनुजास्त एते, सीमन्तिनीभिरनिशं परिभाव्यमानाः ॥ ॥ २ ॥

- **मायामयीं निखिलपातककोटिकूटविद्राविणीं, भृशमसंशयिनो भजन्ति ।**
  त्वां पद्मसुन्दरतनुं तरुणारुणास्यां, पाशाङ्कुशाभयवराद्यकरां वरास्त्रैः ॥ ॥ ३ ॥

- **ते तर्ककर्कशधियः श्रुतिशास्त्रशिल्पैश्छन्दोऽ- भिशोभितमुखाः सकलागमज्ञाः ।**
  सर्वज्ञलब्धविभवाः कुमुदेन्दुवर्णां, ये वाग्भवे च भवतीं परिभावयन्ति ॥ ॥ ४ ॥

- **वज्रपणुन्नहृदया समयद्रुहस्ते, वैरोचने मदनमन्दिरगास्यमातः ।**
  मायाद्वयानुगतविग्रहभूषिताऽसि, दिव्यास्त्रवह्निवनितानुगताऽसि धन्ये ॥ ॥ ५ ॥

- **वृत्तत्रयाष्टदलवह्निपुरःसरस्य, मार्तण्ड मण्डलगतां परिभावयन्ति ।**
  ये वह्निकूटसदृशीं मणिपूरकान्तस्ते, कालकण्टकविडम्बनचञ्चवः स्युः ॥ ॥ ६ ॥

- **कालागरुभ्रमरचन्दनकुण्डगोल- खण्डैरनङ्गमदनोद्भवमादनीभिः ।**
  सिन्दूरकुङ्कुमपटीरहिमैर्विधाय, सन्मण्डलं तदुपरीह यजेन्मृडानीम् ॥ ॥ ७ ॥

- **चञ्चत्तडिन्मिहिरकोटिकरां विचेला- मुद्यत्कबन्धरुधिरां द्विभुजां त्रिनेत्राम् ।**
  वामे विकीर्णकचशीर्षकरे परे तामीडे, परं परमकर्त्रिकया समेताम् ॥ ॥ ८ ॥

- **कामेश्वराङ्गनिलयां कलया, सुधांशोर्विभ्राजमानहृदयामपरे स्मरन्ति ।**
  सुप्ताहिराजसदृशीं परमेश्वरस्थां, त्वामाद्रिराजतनये च समानमानाः ॥ ॥ ९ ॥

- लिङ्गत्रयोपरिगतामपि वह्निचक्र- पीठानुगां सरसिजा सन-सन्निविष्टाम् ।
  सुप्तां प्रबोध्य भवतीं मनुजा, गुरूक्तहूँकारवायुवशिभिर्मनसा भजन्ति ॥ ॥१०॥
- शुभ्रासि शान्तिककथासु तथैव पीता, स्तम्भे रिपोरथ च शुभ्रतरासि मातः ।
  उच्चाटनेऽप्यसितकर्मसुकर्मणि त्वं, संसेव्यसे स्फटिक कान्तिरनन्तचारे ॥ ॥११॥
- त्वामुत्पलैर्मधुयुतैर्मधुनोपनीतैर्गव्यैः, पयोविलुलितैः शतमेव कुण्डे ।
  साज्यैश्च तोषयति यः पुरुषस्त्रिसन्ध्यं, षण्मासतो भवति शक्रसमो हि भूमौ ॥ ॥१२॥
- जाग्रत्स्वपन्नपि शिवे तव मन्त्रराजमेवं, विचिन्तयति यो मनसा विधिज्ञः ।
  संसार सागर समृद्धरणे वहित्रं चित्रं, न भूतजननेऽपि जगत्सु पुंसः ॥ ॥१३॥
- इयं विद्या वन्द्या हरिहरविरिञ्चिप्रभृतिभिः,
  पुरारातेरन्तः पुरमिदमगम्यं पशुजनैः ।
  सुधामन्दानन्दैः पशुपतिसमानव्यसनिभिः,
  सुधासेव्यैः सद्भिर्गुरुचरणसंसारचतुरैः ॥ ॥१४॥
- कुण्डे वा मण्डले वा शुचिरथ मनुना भावयत्येव मन्त्री,
  संस्थाप्योच्चैर्जुहोति प्रसवसुफलदैः पद्मपालाशकानाम् ।
  हैमं क्षीरैस्तिलैर्वा समधुककुसुमैर्मालतीबन्धुजातीश्वेतैरब्धं
  सकानामपि वरसमिधा सम्पदे सर्वसिद्ध्यै ॥ ॥१५॥
- अन्धः साज्यं समांसं दधियुतमथवा योऽन्वहं यामिनीनां,
  मध्ये देव्यै ददाति प्रभवति गृहगा श्रीरमुष्यावखण्डा ।
  आज्यं मांसं सरक्तं तिलयुतमथवा तण्डुलं पायसं वा हुत्वा,
  मांसं त्रिसन्ध्यं स भवति मनुजो भूतिभिर्भूतनाथः ॥ ॥१६॥
- इदं देव्याः स्तोत्रं पठति मनुजो यस्त्रिसमयं,
  शुचिर्भूत्वा विश्वे भवति धनदो वासवसमः ।
  वशा भूपाः कान्ता निखिलरिपुहन्तुः सुरगणा,
  भवन्त्युच्चैर्वाचो यदिह ननु मासैस्त्रिभिरपि ॥ ॥१७॥

॥ इति श्री शङ्कराचार्य विरचितः छिन्नमस्ता स्तोत्रम् एवं प्रचण्ड चण्डिका स्तवराजः समाप्तः ॥

॥ छिन्नमस्ता अष्टोत्तरशत नाम स्तोत्रम् ॥

- पार्वत्युवाच **नाम्नां सहस्रमं परमं छिन्नमस्ता-प्रियं शुभम् ।**
  कथितं भवता शम्भो सद्यः शत्रु-निकृन्तनम् ॥ ॥ १ ॥
  - **पुनः पृच्छाम्यहं देव कृपां कुरु ममोपरि ।**
    सहस्र-नाम-पाठे च अशक्तो यः पुमान् भवेत् ॥ ॥ २ ॥
  - **तेन किं पठ्यते नाथ तन्मे ब्रूहि कृपामय ।**
- **सदाशिव उवाच** **अष्टोत्तर-शतं नाम्नां पठ्यते तेन सर्वदा ॥** ॥ ३ ॥
  - **सहस्र्-नाम-पाठस्य फलं प्राप्नोति निश्चितम् ।**
- **विनियोग** ॐ अस्य श्रीछिन्नमस्ताष्टोत्तर-शत-नाअम-स्तोत्रस्य सदाशिव । ऋषिरनुष्टुप् छन्दः । श्री छिन्नमस्ता देवता । मम-सकल-सिद्धि-प्राप्तये जपे विनियोगः।
  - **ॐ छिन्नमस्ता महाविद्या महाभीमा महोदरी ।**
    चण्डेश्वरी चण्ड-माता चण्ड-मुण्ड्-प्रभञ्जिनी ॥ ॥ ४ ॥
  - **महाचण्डा चण्ड-रूपा चण्डिका चण्ड-खण्डिनी ।**
    क्रोधिनी क्रोध-जननी क्रोध-रूपा कुहू कला ॥ ॥ ५ ॥
  - **कोपातुरा कोपयुता जोप-संहार-कारिणी ।**
    वज्र-वैरोचनी वज्रा वज्र-कल्पा च डाकिनी ॥ ॥ ६ ॥
  - **डाकिनी कर्म्म-निरता डाकिनी कर्म-पूजिता ।**
    डाकिनी सङ्ग-निरता डाकिनी प्रेम-पूरिता ॥ ॥ ७ ॥
  - **खट्वाङ्ग-धारिणी खर्वा खड्ग-खप्पर-धारिणी ।**
    प्रेतासना प्रेत-युता प्रेत-सङ्ग-विहारिणी ॥ ॥ ८ ॥
  - **छिन्न-मुण्ड-धरा छिन्न-चण्ड-विद्या च चित्रिणी ।**
    घोर-रूपा घोर-दृष्टर्घोर-रावा घनोवरी ॥ ॥ ९ ॥
  - **योगिनी योग-निरता जप-यज्ञ-परायणा ।**
    योनि-चक्र-मयी योनिर्योनि-चक्र-प्रवर्तिनी ॥ ॥१०॥

- योनि-मुद्रा-योनि-गम्या योनि-यन्त्र-निवासिनी ।
यन्त्र-रूपा यन्त्र-मयी यन्त्रेशी यन्त्र-पूजिता ॥ ॥११॥
- कीर्त्या कपर्दिनी: काली कङ्काली कल-कारिणी ।
आरक्ता रक्त-नयना रक्त-पान-परायणा ॥ ॥१२॥
- भवानी भूतिदा भूतिर्भूति-दात्री च भैरवी ।
भैरवाचार-निरता भूत-भैरव-सेविता ॥ ॥१३॥
- भीमा भीमेश्वरी देवी भीम-नाद-परायणा ।
भवाराध्या भव-नुता भव-सागर-तारिणी ॥ ॥१४॥
- भद्रकाली भद्र तनुर्भद्र-रूपा च भद्रिका ।
भद्ररूपा महाभद्रा सुभद्रा भद्रपालिनी ॥ ॥१५॥
- सुभव्या भव्य-वदना सुमुखी सिद्ध-सेविता ।
सिद्धिदा सिद्धि-निवहा सिद्धासिद्ध-निषेविता ॥ ॥१६॥
- शुभदा शुभगा शुद्धा शुद्ध-सत्वा-शुभावहा ।
श्रेष्ठा दृष्टिमयी देवी दृष्टि-संहार-कारिणी॥ ॥१७॥
- शर्वाणी सर्वगा सर्वा सर्व-मङ्गल-कारिणी ।
शिवा शान्ता शान्ति-रूपा मृडानी मदनातुरा ॥ ॥१८॥
- इति ते कथितं देवि स्तोत्रं परम-दुर्लभम् ।
गुह्याद्-गुह्य-तरं गोप्यं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ ॥१९॥
- किमत्र बहुनोक्तेन त्वदग्रं प्राण-वल्लभे ।
मारणं मोहनं देवि ह्युच्चाटनमतः परमं ॥ ॥२०॥
- स्तम्भनादिक-कर्म्माणि ऋद्धयः सिद्धयोऽपि च ।
त्रिकाल-पठनादस्य सर्वे सिध्यन्त्यसंशयः ॥ ॥२१॥
- महोत्तमं स्तोत्रमिदं वरानने मयेरितं नित्य मनन्य-बुद्धयः ।
पठन्ति ये भक्ति-युता नरोत्तमा भवेन्न तेषां रिपुभिः पराजयः ॥ ॥२२॥

॥ इति श्रीछिन्नमस्तका अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् ॥

॥ छिन्नमस्ता कवचम् ॥

- हूं बीजात्मिका देवी मुण्डकर्तृधरापरा ।
  हृदयँ पातु सा देवी वर्णिनी डाकिनीयुता ॥ ॥ १ ॥

- श्रीं ह्रीं हुँ ऐं चैव देवी पुर्वस्यां पातु सर्वदा ।
  सर्वाङ्गं मे सदा पातु छिन्नमस्ता महाबला ॥ ॥ २ ॥

- वज्रवैरोचनीये हूं फट् बीजसमन्विता ।
  उत्तरस्यां तथाग्नौ च वारुणे नैर्ऋतेऽवतु ॥ ॥ ३ ॥

- इन्द्राक्षी भैरवी चैवासितांगी च संहारिणी ।
  सर्वदा पातु मां देवी चान्यान्यासु हि दिक्षु वै ॥ ॥ ४ ॥

- इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेच्छिन्नमस्तकाम् ।
  न तस्य फलसिद्धः स्यात् कल्पकोटिशतैरपि ॥ ॥ ५ ॥